Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गोंड जनजाति में सामाजिक परिवर्तन

(रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

सीमा पटेल

शोधार्थी, समाजशास्त्र, शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0)

Article Info

Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1

Page Number : 80-94

Article History
Received : 05 Jan 2024
Published : 17 Jan 2024

सारांश– परिवर्तन प्रकृति का नियम है समाज प्रकृति का एक अंग है। इस कारण समाज में परिवर्तन का होना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। सामाजिक जीवन में उसके स्वरूप, संरचना, व्यवस्था, प्रथा, रीति–रिवाज, मूल्य आदर्श सभी में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर जारी है। ऐसा कोई भी समाज नहीं है जिसमें परिवर्तन की प्रक्रिया न हो। प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन की गति एक समान नहीं होती। किसी समाज में परिवर्तन काफी तेज होता है और किसी समाज में काफी धीमी गति से। सामाजिक जीवन के एक पक्ष में होने वाले परिवर्तन उनके अन्य पक्षों को भी परिवर्तित कर देता है। सामाजिक परिवर्तन के लिये अनेक कारक उत्तरदायी होते हैं। मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक कारक महत्वपूर्ण है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक कारक के सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। गोंड़ समाज में परिवार और विवाह नामक संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। गोंड़ जाति आज भी अपने प्राचीन परम्पराओं के प्रति निष्ठावान है, जिससे ये परम्पराओं को आसानी से तोड़ना नहीं चाहते हैं। जो गांव पर्वतों के किनारे जंगलों के बीच बसे हैं, उसमें परिवर्तन न के बराबर हुआ है। जबकि जो परिवार बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आ हैं, उनमें भी परिवर्तन उपरी तौर पर ही दिखाई देता है। आन्तरिक रूप से ये अभी भी अपनी परम्परागत रीतियों, पद्धतियों से बंधे हुए हैं।

मुख्य शब्द – गोंड जनजाति, सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक एवं वैवाहिक स्थिति।

अवधारणा :– गोंड़ जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है। आदिवासी गोंड़ों का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि इस धरती पर ग्रह और मनुष्य का इतिहास। परन्तु लिखित इतिहास के प्रमाण के

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अभाव में यह एक खोज का विषय बन गया। यहॉ गोंड़ जनजाति के प्राचीन निवास के क्षेत्र के साक्ष्य उपलब्ध हैं। गोंड़ समुदाय द्रविड वर्ग के माने जाते हैं। जिनमें जाति व्यवस्था नहीं थी। गहरे रंग के ये लोग, इस देश मे पांच या छहः हजार वर्ष पूर्व से निवासरत हैं। एक प्रमाण के आधार पर कहा जा सकता है कि गोंड़ जाति का सम्बन्ध सिन्धु घाटी सभ्यता से भी रहा है।

भारत में मूल निवासी आदिवासी ही हैं। गोंड़ इनमें पुरातन माने जाते हैं इनका प्रभावशाली और व्यापक समूह है। गोंड़ो की उत्पत्ति सम्बन्धी कई धारणाएं, मिथ कथाएं, किवदंतिया प्रचलित हैं। एक बैगा उत्पत्ति कथा के अनुसार एक तम्बू से दो आदमी निकले, पहला बैगा हुआ और दूसरा गोंड़, बैगा टंगिया लेकर जंगल चला गया, और गोंड़ ने नागर सम्हाल लिया। कई किवदंतियों में गोंड़ों की उत्पत्ति भगवान शंकर से मानी जाती है।

गोंड़ी धर्म की स्थापना पारी कुमार लिंगो ने शम्भुशेक के युग में की थी। गोंड़ी धर्म कथाकारो के अनुसार, शम्भुशेक अर्थात् महादेव जी का युग देश में आर्यो के आगमन के पहले हुआ था। इसी काल से ही कोया पुनेम धर्म का प्रचार हुआ था। गोंड़ी बोली मे कोया का अर्थ मानव तथा पुनेम का अर्थ धर्म, अर्थात मानव धर्म आज से हजारो वर्ष पूर्व से ही गोंड़ जनजातियों द्वारा मानव धर्म का पालन किया जा रहा है। अर्थात् गोंड़ी संस्कृति में वसुद्यैव कुटुम्बकम।

गोंड़ तेलूगू शब्द 'कोड़ अर्थात् पहाडियों से व्युत्पन्न आदिवासी लोग है। जो काफी हद तक मध्य भारत के मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले, पूर्वी महाराष्ट्र (विदर्भ के चारो ओर) छत्तीसगढ़ (बस्तर), उत्तरी आन्ध्रा सहित विभिन्न क्षेत्रों में निवास कर रहे है। प्रदेश (गोदावरी के आदिलाबाद जिले के उत्तर में) नदी और पश्चिमी उड़ीसा, काला हांडी, 4 लाख से अधिक जनसंख्या के साथ निवास करते हैं। स्पष्ट रूप से गोंड़ जनजाति केन्द्रीय भारतीय बड़ी जनजाति के रूप में गठित है।

रीवा जिले के सन्दर्भ में गोंड़ जनजाति में सामाजिक परिवर्तन का प्रार्दुभाव बहुत ही मन्द गति से हो रहा है। रीवा जिले के सर्वेक्षण के दौरान मैने यह पाया कि, जनजातीय लोग विषम भौगोलिक परिस्थितियों का सामना करते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इनका समाज ऐतिहासिक रूढ़िगत एवं परम्परागत धार्मिक विश्वासों से परिपूर्ण एक मिश्रित समाज हैं। इनमें परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ निश्चित रूप से अधिक जटिल, विस्तृत एवं मिश्रित हैं। गोंड़ जनजातियाँ वर्तमान में विकास और परिवर्तन के निर्णय के द्वार पर खड़ी हुई, एक अशिक्षित और अभावग्रस्त जनजाति है। शासन के समक्ष इनकी उन्नति एवं सम्पन्नता के प्रयासों को करने की एवं सम्पूर्ण जनजातीय समाज की उन्नति एक विषम समस्या बनी हुई है। क्या हम यह अपेक्षा इनसे कर सकते है कि, देश की उन्नति में साझेदार होने के साथ–साथ ये अपनी सांस्कृतिक

अक्षुण्णता को बनाए रख सकते हैं। वर्तमान समय में देश की सामाजिक व्यवस्था के साथ इनको सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न बनाकर हम सामाजिक सामंजस्य एवं एकीकरण के स्वप्न को साकार कर सकते हैं। इस संबंध में सन् 1952 में तत्कालीन राष्ट्रपति महोदय द्वारा स्पष्ट किया गया कि, जनजातियों का शेष समाज के साथ आत्मसात्करण हेतु उन्नति का लक्षण माना जाय अथवा क्या यह उचित है, कि उन्हे अपनी विशिष्ट संस्कृति परम्पराओं, और रीति–रिवाजों को बनाए रखने की सुविधा प्रदान की जाय।

पूर्व साहित्य का अध्ययन :– डॉ. हरिशचन्द्र उत्प्रेती (1982) इन्होने अपने शोध प्रबंध ''भारतीय जनजातियाँ'' में बताया कि गोंड़ आज के विज्ञान के युग में भी अधिकांशतः प्रकृति पर ही आश्रित है। जंगलों तथा पहाड़ों से खाद्य संग्रह करना, नदियों तथा तालाबों में मछली पकड़ना तथा कही–कही घटियों या अनेक पहाड़ी क्षेत्रो पर कृषि करना ही उनके आजीविका के प्रमुख साधन रहें है। अतः आधुनिक तौर तरीके बरतने वाले तथा सभ्य कहे जाने वाले लोगां की अपेक्षा सभ्यता की दौड़ में पिछली समझे जाने वाली जातियों का सामाजिक एंव आर्थिक जीवन भौगोलिक पर्यावरण के प्रत्यक्ष प्रभाव से ओत–प्रोत है। पर्यावरण के अनुसार ही उनका जीवन व्यतीत होता रहा है। जनजातीय जीवन को प्रकृति से लगातार संघर्ष करना पड़ता है और उदर पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

सिद्दीकी शाहेदा (2014) इन्होने अपने शोध पत्र 'रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइसेंज, में कोल जनजाति के महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चल रही योजनाओं को जन–जन तक पहुॅचाने संबंधी व्याख्या की गई है। कोल जनजाति मुख्यतः कृषि मजदूरी करके अपना जीवन यापन करती है अब ये शहरों में जाकर भी मजदूरी करने लगे है तथा भवन निर्माण में दिहाड़ी मजदूरी करते हैं कोल जनजाति की महिलायें भी आर्थिक क्रियाओं में बराबरी से योगदान देती है घरेलू अर्थव्यवस्था में इनकी सहभागिता महत्वपूर्ण होती है। शिक्षित कोल प्रदेश के शासकीय अशासकीय विभागों में कार्यरत है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, और वैश्वीकरण के तीव्र विकास के कारण इनमें भी महिलायें पुरूषों के समकक्ष कार्य करने लगीं है। शारीरिक परिश्रम के पश्चात् उनमें स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें भी पनपती है। प्रस्तुत शोध पत्र 'कोल जनजाति' की महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी पर केन्द्रित है।

डॉ. के. के. शर्मा (1989) इन्होने अपने शोध प्रबंध ''अनुसूचित जनजातियों में सांस्कृतिक परिवर्तन'' में शहडोल जिले की चार प्रमुख जनजातियों, गोंड़, बैगा, पंका, अगरिया के सांस्कृतिक पक्षों में होने वाले परिवर्तनों की विस्तृत व्याख्या की है।

दीप मिश्रा (2003) इनके द्वारा अप्रकाशित लघु शोध कार्य में कोल जनजाति में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन के अन्तर्गत कोल जनजाति में पाये जाने वाले परिवर्तनों एवं आधुनिकीकरण के बारे में विस्तार से बताया है।

डॉ. गंगा बैरागी (2013) इन्होने अपने शोध प्रबंध ''गोंड़ जनजाति में सामाजिक परिवर्तन (शहडोल जिला के विशेष संदर्भ में) में कहा कि गोंड़ों में गुदने की प्रथा, आज भी परम्परागत रूप में विद्यमान है। इनकी आर्थिक स्थिति आज भी दयनीय है, ये आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। प्रत्येक गोंड़ों को, वन्य जीवन से विशेष लगाव है। ये शहर की भीड़–भाड़ में जाना कम ही पसंद करते हैं। जंगलों में रहने को, वे अपना एकाधिकार समझते हैं। इसका मूल कारण गोंड़ों को अपनी परम्पराओं, रूढ़ियों और मान्यताओं से बेहद प्यार है। ये अपनी अल्प आवश्यकताओं की पूर्ति से ही संतुष्टि रहते हैं, ये महत्वाकांक्षी नहीं होते। पीने के लिए महुए की शराब और पेट भरने के लिए किसी भी प्रकार का पेज मिल गया, बस पर्याप्त है। पहनने के लिए लंगोटी और ओढ़ने के लिए एक कमरी बहुत है। घर, बारी (बगिया) खेत में थोड़ी मेहनत, जंगलों में काम और पर्व–त्यौंहारों में विवाह में थोड़ा नाच–गाना, बस यही इन जनजातीय लोगों की जिन्दगी है।

उद्देश्य :– स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गोंड जनजाति में हुए परिवर्तनों के कारणों, दिशा, क्रम और परिणामों के कार्यकरण सम्बन्धों का विश्लेषण की इच्छा तथा परिवर्तन में निहित मूलभूत नियमों और सिद्धान्तों की खोज परिवर्तन के विभिन्न कारकों के सापेक्षित महत्व का ज्ञान प्राप्त करना, परिवर्तन, सामाजिक परिस्थितियों में इस क्षेत्र विशेष की जनजाति गोंड के सामाजिक एवं उनके

1. गोंड जनजाति में सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन।
2. सरकार द्वारा इनके लिये किये गये एवं प्रावधान, का इनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना,
3. कल्याणकारी योजनाओं से इनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना,
4. इनके पारिवारिक जीवन, जैसे – विवाह का स्वरुप, वैवाहिक सम्बन्धों, परम्परात्मक प्रतिमानों, पारिवारिक, विघटन, एवं पारिवारिक अन्तः क्रियाओं तथा उनमें होने वाले परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करना,
5. शिक्षा का उनके जीवन पर तथा उसके स्वास्थ्य की स्थिति एवं परिवर्तन।
6. गोंड़ जनजाति में होने वाले, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना।

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये विचार पूर्वक निदर्शन प्रविधि का उपयोग किया गया है। चयनित सूचनादाताओं से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा सूचनायें संकलित की गयी है उत्तरदाताओं का चयन सर्वेक्षण, निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के लिये कुल 50 उत्तरदातों का चयन किया गया है अध्ययन में अवलोकन – सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक आंकड़ो के लिये समाचार पत्र पत्रिका, सरकारी, सांख्यिकी आंकड़े, पुस्तके व इन्टरनेट का प्रयोग किया गया है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषण कर निष्कर्ष निकलने का प्रयास किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र

रीवा जिले की गोंड़ जनजाति के सामाजिक जीवन एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन विशेष में रहने वाले गोंड़ जनजाति के जीवन के बारे में कोई भी लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है। रीवा जिले गोड़ की कुल संख्या 9508 है जिसमें पुरूष 5003 महिला 4505 है।

रीवा जिले की सामाजिक संरचना एवं सामाजिक संगठन में गोंड़ जनजाति का विशेष महत्व है। रीवा जिले में गोंड़ जनजाति अन्य क्षेत्रों के गोंड जनजाति की अपेक्षा दूसरे समाजों के ज्यादा निकट एवं प्रत्यक्ष सम्पर्क में है। इस ग्राम पंचायत में गोंड जनजाति सबसे बड़ी जनजाति है।

1) शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण के लिये हमने रीवा जिले में निवास करने वाले गोंड जनजाति को ही शामिल किया गया है।
2) कार्य में रीवा जिले के गोंड जनजाति के परिवारों का चुनाव करके अध्ययन किया गया है, तथा इन परिवारों के प्रमुखों से प्राप्त जानकारी के अनुसार निष्कर्ष निकाला गया है।
3) अनुसंधानकार्य में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दोनों स्वरुपों को रखा गया है,
4) आकड़ों एवं तथ्यों को एकत्र करने के लिये साक्षात्कार अनुसूची की पद्धत्ति को सुचारु रुप से कार्यान्वित किया गया है।
5) प्रस्तुत शोधकार्य में गोंड जनजाति के सामाजिक जीवन से सम्बन्धित सम्पूर्ण पक्षों को ध्यान में रखकर उसके बारे में सामान्य अध्ययन किया गया है।

उपकल्पना :–

1. गोंड जनजाति के लोगों का शिक्षा का स्तर निम्न है।
2. ये लोग परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है।
3. इनमें राजनीतिक जागरूकता की कमी है।

4. गोंड जनजाति में आर्थिक स्थिति कमजोर है।

तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण :–

तालिका क्रमांक – 1

परिवारों का स्वरूप

क्रमांक	विवरण	संख्या	
		परिवार की संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	20	40
2	एकाकी परिवार	30	60
	योग	**50**	**100**

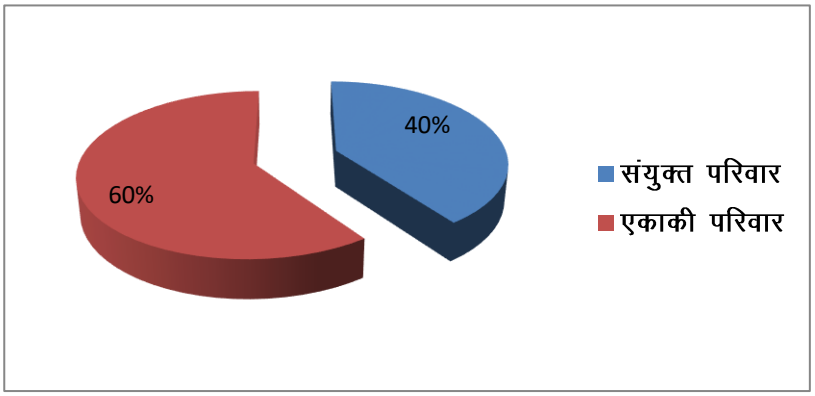

सर्वेक्षित किये गये 50 गोंड परिवारों के स्वरूप की जानकारी प्राप्त की गई उसमें 30 परिवार एकांकी है। जिनका प्रतिशत 60 है। जबकि 20 परिवार संयुक्त पायें गये जिनका प्रतिशत 40 है। इस प्रकार यह पाया गया कि संयुक्त परिवार की संख्या अब कम होती जा रही है और एकांकी परिवार की संख्याओं में वृद्धि होती जा रही है। इसका कारण आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण है जिसके कारण लोंग शहरों आते जा रही है। इस प्रकार संयुक्त परिवारों की संख्या निरंतर घटती जा रही है।

तालिका क्रमांक – 2

परिवार के व्यवसाय का विवरण

क्रमांक	विवरण	परिवार का व्यवसाय	
		परिवार की संख्या	प्रतिशत
1	कृषि	20	40

2	मजदूरी	15	30
3	नौकरी	5	10
4.	व्यवसाय	10	20
	योग	**50**	**100**

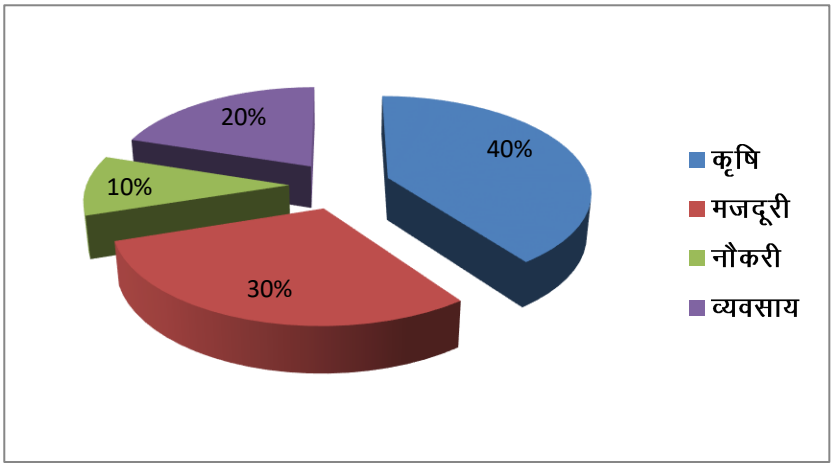

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 के देखने से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में गोंड ज्यादातर परिवार कृषि काम में लगे है। उनकी संख्या 20 है तथा प्रतिशत भी 40 है। मजदूरी करने वाले परिवारों की संख्या 15 है पूर्व की मजदूरी करने वाले परिवारों की संख्या घटी है। अब उसका प्रतिशत 30 है तथा नौकरी वाले 5 परिवार है तथा उसका प्रतिशत 10 है व्यवसाय में लगे परिवारों की संख्या 10 है तथा प्रतिशत 20 है।

परिवार की आर्थिक स्थिति :– सर्वेक्षित 50 गोंड परिवारों के मुखियों से उनके आर्थिक स्थिति के बारे में बात करने से प्राप्त जानकारी से यह ज्ञात होता है आज भी उनकी आर्थिक स्थिति विशेष रूप से सुधरी नहीं है। लेकिन भिर भी उतने में ही संतोष किये हैं, वे मानते है कि खेती हमारी मुख्य पेशा है और हमारी खेती वाड़ी का काम भगवान के भरोसे होता है हमें जितना भगवान ने दे दिया उतना ही हमारे लिये पर्याप्त है जो परिवार बाहर मजदूरी का काम करते हैं उन्हें भी उचित मजदूरी नहीं मिल पाती है बताते हैं कि हम लोगों को तकनिकी ज्ञान न होने के कारण साधारण काम कराया जाता है। तथा मजदूरी भी कम दी जाती है। वह मजदूरी कितना निर्धारित करता है यह ठेकेदार तथा फैक्ट्री मालिक पर निर्भर करता है। इन्हीं समस्त कारणों से इनकी आर्थिक स्थिति विशेष तौर से सुधरी हुई दिखाई नहीं पड़ती है। इनकी आर्थिक स्थिति का विवरण नीचे तालिका क्रमांक 14 मे दी गई है।

तालिका क्रमांक – 3

परिवार की आर्थिक स्थिति का विवरण

क्रमांक	विवरण	आर्थिक स्थिति	
		संख्या	प्रतिशत
1	अच्छा	5	10
2	सामान्य	20	40
3	खराब	25	50
	योग	**50**	**100**

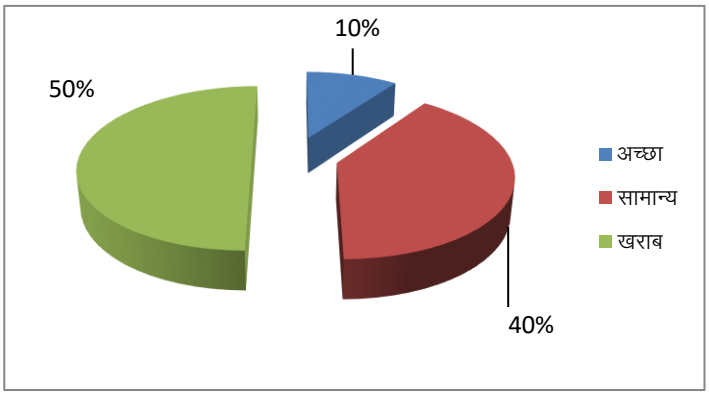

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 को देखने से स्पष्ट है कि अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों की संख्या 5 है तथा प्रतिशत 10 है सामान्य स्थित वाले परिवार की संख्या 20 है उसका प्रतिशत 40 है तथा 25 परिवार ऐसे हैं जिनकी आर्थिक स्थिति आज भी खराब है उसका प्रतिशत 50 है।

शैक्षणिक परिवर्तन :– मानव द्वारा आदिकाल से ही ज्ञान का संचय किया जाता रहा है। प्रत्येक नयी पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी द्वारा ज्ञान सामाजिक विरासत से प्राप्त होता है और कुछ वह स्वयं अर्जित करता है। मानव के प्रत्येक पीढ़ी में सीखने की प्रक्रिया की सहायता से और हस्तान्तरण द्वारा ज्ञान की वृद्धि होती गयी ज्ञान की यह परम्परात्मक श्रृखला ही शिक्षा है जिसके द्वारा मानव ने अपनी मानसिक, अध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है। शिक्षा ने ही मानव को पशु स्तर से ऊँचा उठाया है और श्रेष्ठ सांस्कृतिक प्राणी बनाया है।

तालिका क्रमांक – 4

शिक्षा की स्थिति

क्रमांक	विवरण	शिक्षा की स्थिति	
		संख्या	प्रतिशत
1	शिक्षित	23	46
2	अशिक्षित	27	54
	योग	**50**	**100**

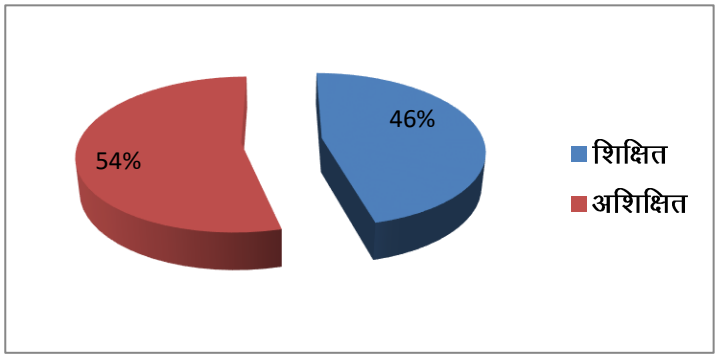

उपरोक्त तालिका क्रमांक 4 को देखने से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में शिक्षा के प्रति लोगों का रूझान बढ़ा है आज के समय में सरकारी योजनाओं के कारण शिक्षा का स्तर निरंतर गतिमान है इसमें छात्रवृत्ति योजना, माध्यान भोजन, मुफ्त पाठ सामग्री, विद्यार्थी प्रोत्साहन योजनायें आदि है। इसके कारण शिक्षित लोगो संख्या 23 एवं इनका प्रतिशत 46 है एवं अशिक्षित लोगों की सख्या 27 एवं प्रतिशत 54 है।

सांस्कृतिक परिवर्तन :– मानव द्वारा प्रचीन समय से निर्मित प्रत्येक भौतिक एवं अभौतिक साधन ही संस्कृति है। मानव प्रकृति के अन्य जीवों से बुद्धिमान होने के कारण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति बौद्धिक आधार पर करता है। इसके साथ ही व्यक्ति को भूत व वर्तमान का ज्ञान होता है। तब वह भविष्य के बारे में चिन्तन करता है। यही चिन्तन जब समन्वित होता है तब वह संस्कृति का रूप ले लेता है।

तालिका क्रमांक – 5

सांस्कृतिक परिवर्तन

क्रमांक	विवरण	सांस्कृतिक परिवर्तन	
		संख्या	प्रतिशत
1	परम्परागत	20	40
2	आधुनिक	30	60
	योग	**50**	**100**

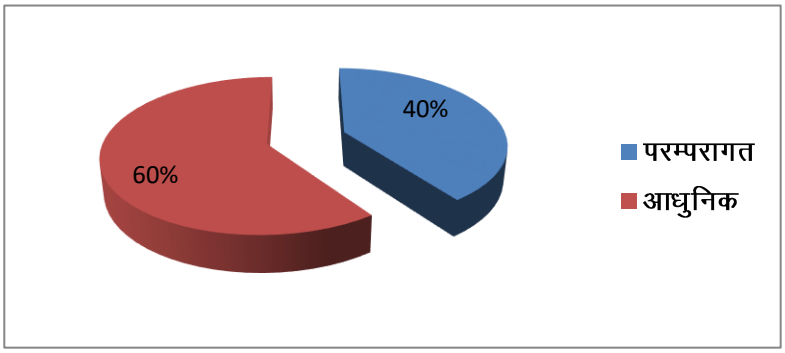

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 5 को देखने से पता चलता है कि आज के समय में ग्राम पंचायत के गोंड़ों के परिवारों में संस्कार सम्पादन का जो तरीका है वह पहले का उल्टा हो गया है। आज 20 अर्थात 40 प्रतिशत परिवार ही ऐसे बचे है जिनमें संस्कारों का सम्पादन परम्परागत तौर तरीकों से होता है तथा 30 अर्थात 60 प्रतिशत ऐसे परिवार हैं जिनमें आधुनिक तौर तरीकों से संस्कारों का सम्पादन कराया जाता है।

परिवर्तन के प्रमुख कारण :–सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति परिवर्तनशील होती है और समाज में निरन्तर परिवर्तन की गति चलती रहती हैं। सामाजिक परिवर्तन किसी एक दो कारणों से नहीं होता बल्कि यह परिवर्तन अनेक कारणों के प्रभावों से उत्पन्न होता है। आज तो सभी समाजों में परिवर्तन के नये – नये आयाम दिखाई दे रहे है। अध्ययन किये गये गोंड समाज में सामाजिक परिवर्तन के अनेक कारण हैं। इन कारणों में से कुछ कारण सामान्य है। जो मुख्यतः सभी समाजों में परिवर्तन ला रहे हैं। यद्यपि अन्य समाजों की तुलना में सामान्य कारणों से उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों, गति, दिशा, मात्रा, इनमें भिन्न होती है। तथा कुछ परिवर्तन क्षेत्रीय परिस्थितियों एवं दशाओं के कारण होता है। आजादी के बाद भारत देश की उन्नति और प्रगति के लिए अनेक नित्य नये प्रयास किये गये जिससे भारत में परिवर्तन की गति बढ़ गयी। गोंड भारत की सबसे प्राचीन जनजाति मानी जाती है, भारत देश को गोंड़ो का अभिन्न अंग माने जाने के कारण

इस भारतीय परिवर्तन का प्रभाव इनके सम्पूर्ण जीवन में पड़ना स्वाभाविक है। प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ने मतदान का अधिकार देकर उन्हें देश की शक्ति बिन्दु बना दिया। ये लोग सवर्ण हिन्दुओं के सम्पर्क में आने लगे और ये अपनी संस्कृति व कला को छोड़ कर धीरे– धीरे उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को अपनाने लगें।

निष्कर्ष :–जनजातियों को वन्य जाति या आदिम जाति, आदिवासी गिरीजन तथा अनुसूचित जनजाति आदि नामों से सम्बोधित किया जाता हैं। इन लोगों को आदिम जाति या जनजाति इस कारण कहा जाता है कि ये भारत देश के प्राचीनतम एवं मूल निवासी है। ये कहते हैं कि हम भारत के आदिवासी ही नहीं बल्कि मूल निवासी भी है। सम्भवतः भारत में आर्यों एवं द्रविडों के आगमन के पूर्व से ही ये लोग यहां निवास करते थें। इसलिए ये अपने आप को भारत का मूलनिवासी मानते हैं।

रीवा जिले में रहने वाले गोंड परिवार के स्वरूप में बदलाव के साथ–साथ उनके कार्यो मे ंपरिवर्तन हुआ है। कृषि कार्य गोंडों का प्रमुख व्यवसाय था किन्तु वर्तमान समय मे ंभी ज्यादातर परिवार कृषि कार्य मे लगा है। गोंड जनजाति की जो पारिवारिक सम्बन्ध है वे अच्छे है इसका कारण यह है कि संयुक्त परिवार टूटकर एकल या एकाकी परिवार का रूप ले लिये है जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्धेां में ज्यादा तनाव नहीं आता है। सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि 50 परिवारों में 42 प्रतिशत परिवार ऐसे है जिनके पारिवारिक सम्बन्ध मधुर है तथा 37 प्रतिशत परिवार ऐसे है जिनके सम्बन्ध सामान्य है तथा 21 प्रतिशत परिवार ऐसे है जिनका सम्बन्ध तनाव पूर्ण है कारण यह है कि जिन परिवारों के व्यक्ति शराब का उपयोग करते है उनके परिवारों के सम्बन्ध तनावपूर्ण है तथा पूर्व के पारिवारिक सम्बन्ध मधुर सम्बन्ध वाले परिवार का संख्या 12 अर्थात 24 प्रतिशत थी तथा सामान्य सम्बन्ध वाले परिवारों की संख्या 10 अर्थात 20 प्रतिशत थी तनावपूर्ण परिवार वालों की संख्या 28 अर्थात 56 प्रतिशत थी तनवापूर्ण व्यवहार वाले परिवार जो वर्तमान में घटकर 21 प्रतिशत ही बचे है।

सुझाव :–

1. गोंड जनजाति विकास के लिये आधुनिकतम शिक्षा की व्यवस्था की जाये तथा उन्हें टेक्निकल कोर्स कराये जाये साथ ही उनकी पढ़ाई के लिये कम ब्याज पद ऋण मुहैया कराया जाय।
2. उन व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही किया जाय तो भोले–भोले अशिक्षित जनजाति के बच्चे एवं महिलाओं तथा पुरूषो का शारीरिक एवं आर्थिक रूप में शोषण करते हैं।
3. जनजातीय क्षेत्रों में पुलिस चौकी की व्यवस्था की जाये तथा उन पर हो रहे अत्याचारों की कार्यवाही सही समय पर की जाये।
4. इनके गावों के आस–पास स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र खोला जाय तथा उनके स्वास्थ्य सुधार हेतु विशेष कार्यक्रम चलाया जाय एवं इनके क्षेत्र में स्वास्थ्य सुधार हेतु शिविर लगाये जाये।
5. युवागृह आदिवासी युवकों और युवतियों के लिये शिक्षा के साधन होते हैं। अतः युवागृहों को नष्ट होने से बचाया जाना चाहिए तथा उनका पुनर्रूत्थान किया जाये।

6. स्वास्थ्य सम्बधी सुझाव आदिवासी युवकों और युवतियों को कम्पाउंडर और दाई का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
7. जनजातीयों में जागरूकता का विकास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. नायडू पी.आर. (2008) भारत के आदिवासी– विकास की समस्याएँ राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृ. 09
2. शर्मा ब्रह्मदेव (1994) आदिवासी विकास–एक सैद्धान्तिक विवेचन (म.प्र.) हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ. 04।
3. सिद्दीकी शाहेदा, रावत मनोज (2014) कोल जनजाति की महिलाओं में वैवाहिक परिवर्तन 'रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइसेंज, गायत्री पब्लिकेशन रीवा पृ. 154–156
4. शर्मा श्रीनाथ (2010) 'जनजाति समाजशास्त्र' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 65।
5. तिवारी शिवकुमार व शर्मा, कमल(1994)'मध्यप्रदेश की जनजातियॉ एवं समाज व्यवस्था' पृ. 24।
6. सिंह वीरेन्द्र (2007) 'मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान' अरिहंत पब्लिकेशन्स मेरठ पृ. 71
7. मीणा लक्ष्मीनारायण (1991) 'मीणा जनजाति–एक परिचय' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 16।
8. सिन्हा आर.के. (1983) 'पाण्डो जनजाति' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल। पृ. 11।